Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 7 (2023) pp: 113-124
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अम्बेडकर नगर जनपद के सुरहुरपुर पुरास्थल का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण

डॉ0 श्याम प्रकाश

अतिथि सहायक प्राध्यापक

इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

***R**eceived 06 July, 2023; **R**evised 16 July, 2023; **A**ccepted 18 July, 2023 © The author(s) 2023.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

टीले का सेटलाइट से लिया गया दृश्य, विश्व सेटेलाइट मानचित्र में भारत में स्थित अम्बेडकर नगर जनपद की स्थिति (चित्र सं0–1)

भौगोलिक स्थिति

अम्बेडकर नगर उत्तर प्रदेश राज्य का एक जनपद तथा शहर है जो 26^0 09′ उत्तरी अक्षांश से 26^0 40′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 12′ पूर्वी देशान्तर से 83^0 05′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह जनपद उत्तर में बस्ती तथा संतकबीर नगर जनपदों से, उत्तर–पूर्व में गोरखपुर जनपद से, दक्षिण में सुल्तानपुर जनपद से, पश्चिम में फैज़ाबाद जनपद से, पूरब में आज़मगढ़ जनपद तथा दक्षिण–पूरब में जौनपुर जनपद की शाहगंज तहसील से घिरा हुआ है। जनपद का क्षेत्रफल 2,520 वर्ग किमी0 है। पूरब से पश्चिम इसकी लम्बाई लगभग 75 किमी0 तथा उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई लगभग 42 किमी0 है। अम्बेडकर नगर जनपद मध्य गंगा घाटी के केन्द्रीय भाग में स्थित है, यहाँ जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। इस मिट्टी को कृषि कार्य के लिए अत्यन्त उपयोगी माना जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 23,97,888 है। यहाँ की साक्षरता दर 74.37 प्रतिशत है।[1]

उत्तर प्रदेश (अम्बेडकर नगर जनपद सहित) एक भौगोलिक इकाई ही नहीं अपितु संस्कृतियों का संगम भी है और गंगा–यमुनी संस्कृति का एक अनूठा प्रतीक भी।[2] जनपद की भौगोलिक स्थिति के निर्धारण में नदियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस जनपद से प्रवाहित होने वाली नदियों में घाघरा, टोंस (तमसा)[3]

तथा मझुई/मजुई जलधारा (लघु नदी)[4] का महत्वपूर्ण स्थान है। जनपद में कई झीलें भी हैं जिनमें हंसवर झील, देवहाट झील तथा दरवन झील का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है जिनमें नौकायन की भी सुविधा उपलब्ध है।[5]

जनपद के प्रमुख स्थल :

इस जनपद के प्रमुख स्थलों में बरमबाबा स्थान, मकरही रियासत, गोबिन्द बाबा का स्थान, अम्बेडकर पार्क, अकबरपुर, पूरा का शिव मन्दिर, ब्रह्म स्थान शिव बाबा, बड़ेपुर का 200 वर्ष से अधिक प्राचीन शिव मन्दिर, माघ पूर्णिमा पर आयोजित होने वाला श्रावण क्षेत्र का वार्षिक मेला आदि का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है। जनश्रुति चर्चित है कि श्रवण कुमार अयोध्या के राजा दशरथ द्वारा इसी स्थान पर मारे गये थे। मालीपुर रेलवे स्टेशन के दक्षिण में स्थित झालखण्ड का शिवलिंग (जो पीपल के वृक्ष से स्वयं उत्पन्न माना जाता है।), लोरपुर रियासत का किला, राजेसुल्तानपुर का बलुआघाट तथा कम्हरिया घाट, बाबा ब्रह्मचारी की कुटी एवं काली मन्दिर, किछौछा में महान सूफी संत हज़रत मख़दूम सुल्तान सैयद अशरफ जहांगीर सेमानी की दरगाह, भुजगी रियासत, पुरातत्त्व विभाग लखनऊ मण्डल द्वारा संरक्षित प्राचीन नवाबी मस्ज़िद इत्यादि प्रमुख हैं।[6]

सुरहुरपुर टीले का विहंगम दृश्य (चित्र सं0–02)

यह पुरास्थल **26⁰ 15′ 37.08′′उत्तरी अक्षांश और 82⁰ 40′ 04.55′′ पूर्वी देशान्तर**[7] के मध्य अम्बेडकर नगर जनपद के जलालपुर तहसील में जलालपुर विकासखण्ड के सुरहुरपुर गाँव के दक्षिण–पश्चिम दिशा में स्थित है जो मानवीय क्रिया–कलाप एवं कृषि कार्य के चलते पूर्णतः नष्ट हो चुका है। वर्तमान में स्थल पर थोड़ा सा ऊँचा भाग बचा है किन्तु उस पर भी कृषि कार्य किया जा रहा है। स्थल पर पहुँचने के लिए अम्बेडकर नगर जनपद मुख्यालय से लगभग 21 कि0मी0 की यात्रा जौनपुर की तरफ करनी पड़ती है। स्थल मुख्य मार्ग के दायें किनारे पर स्थित है।

यह टीला 300X270 मी0 क्षेत्रफल में विस्तृत है, इसका आकार लगभग गोल है, समीप के धरातल से इसकी ऊँचाई 4–5 मी0 है। यहाँ के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से लाल रंग के मृद्भाण्ड प्राप्त होते हैं।[8]

सुरहुरपुर टीले पर विभिन्न कालों के बिखरे मृद्–पात्र खण्ड (चित्र सं0–03)

(चित्र सं0–04)

चित्र संख्या–04 में निम्नलिखित संस्कृतियों के मृद्–पात्र खण्डों को समायोजित किया गया है–

1. दाहिने से सबसे ऊपर एन0बी0पी0 कालीन लाल रंग के थाली का मृद्–पात्र खण्ड
2. थाली के नीचे रिम युक्त गुप्त कालीन कटोरे का मृद्–पात्र खण्ड
3. दाहिने से सबसे नीचे एन0बी0पी0 कालीन काले रंग का कटोरे का मृद्–पात्र खण्ड
4. मध्य में सबसे ऊपर कुषाण कालीन फैलते मुंह वाले कटोरे का मृद्–पात्र खण्ड
5. आधुनिक कालीन मृद्–पात्र खण्ड के नीचे गुप्त कालीन नाखून के आकार वाले कटोरे का मृद्–पात्र खण्ड
6. गुप्त कालीन नाखून के आकार वाले कटोरे के नीचे आधुनिक मृद्–पात्र खण्ड
7. आधुनिक मृद्–पात्र खण्ड के नीचे पुनः आधुनिक मृद्–पात्र खण्ड
8. बायें से सबसे ऊपर मध्य कालीन बड़े रिम युक्त हांडी का मृद्–पात्र खण्ड
9. बायें से रिम युक्त कटान वाला मध्य कालीन हांडी का मृद्–पात्र खण्ड

सुरहुरपुर पुरास्थल के धरातलीय सर्वेक्षण से प्राप्त सबसे प्राचीन संस्कृति उत्तरी कृष्णमार्जित पात्र परम्परा वाली है। नमूना संग्रह के रूप में लाल रंग के एक थाली के टुकड़े तथा एक काले रंग के कटोरे के खण्डित मृद्–पात्र का चयन किया गया है थाली का मध्य भाग कम उन्नतोर है। यह पात्र–खण्ड उत्तरी कृष्णमार्जित पात्र–परम्परा वाली संस्कृति (छठीं शताब्दी ई0 पू0) के अन्तिम चरण का प्रतीत हो रहा है।[9]

इस काल के पात्रों का निमार्ण तेज गति के चाक पर किया जाता था।[10] भारत में इस प्रकार के पात्रों की प्राप्ति मध्यगंगा घाटी क्षेत्र से बहुतायत में होती है।[11] सुरहुरपुर का यह पुरास्थल भी इसी के अंतर्गत आता है। सर्वप्रथम इस संस्कृति से सम्बन्धित पात्र–खण्ड मार्शल को तक्षशिला के भीर टीले के पुरातात्त्विक उत्खनन में प्राप्त हुए थे जिसको उन्होंने काली काचित पात्र–परम्परा कहा था।[12] कालान्तर में सर मार्टिमर ह्वीलर एवं कृष्णदेव ने इसे उत्तरी काली चमकीली पात्र–परम्परा कहा। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के प्राग्–इतिहासविद् एवं क्षेत्रीय पुरातत्त्व वैज्ञानिक **प्रो0 अनिल कुमार** का मानना है कि ''मध्य गंगा घाटी के अधिकांश पुरास्थलों से छठीं शताब्दी ई0 पू0 के मृद्–पात्रों (एन. बी. पी.) का प्रभूत मात्रा में प्राप्त होना इस बात की तरफ़ संकेत करता है कि सम्भवतः तत्कालीन समय में मध्य गंगा घाटी क्षेत्र में इस प्रकार की मृद्भाण्ड निर्माण कला का विकास हो चुका था। चूंकि इस काल के अधिकांश मृद्–पात्रों पर चित्रण–अभिप्रायों का अलंकरण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है अतः इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तरी कृष्णमार्जित पात्र–परम्परा के निर्माता एक उत्तम कोटि के कलाकार एवं चित्रकार थे। प्रो. अनिल कुमार आगे बताते हैं कि एन. बी. पी. पात्रों का निर्माण अत्यन्त तेज़ गति के चाक पर किया गया है जिसमें प्रयुक्त मिट्टी को भली प्रकार से गूंथा गया है तथा काले रंग के लेप के साथ इनको उच्चतम् (लगभग 1000^0 डिग्री सेंटीग्रेड) ताप पर पकाया गया है ऐसे में ये मृद्–पात्र अत्यन्त कठोर हो गये हैं जो ज़मीन पर गिरने पर धातु की सी ध्वनि उत्पन्न करते हैं इस प्रकार इन मृद्–पात्रों के निर्माताओं को उत्तम कोटि का मृद्भाण्ड कलाविद् कहा जा सकता है।'' प्रो. अनिल कुमार के इस उद्धरण से स्पष्ट है कि एन0 बी0 पी0 काल अर्थात छठीं शताब्दी ई0 पू0 एक वैज्ञानिक विकास का काल था जिसमें भवन निर्माण से लेकर मृद्भाण्ड निर्माण तक में व्यापक परिवर्तन दिखलाई पड़ता है।

इसी समय गंगा घाटी में दो महान समाज सुधारकों लुम्बिनी में तथागत गौतम बुद्ध[13] तथा वैशाली में महावीर स्वामी[14] का प्रादुर्भाव हुआ। इन दोनों ने मिलकर अपने–अपने धर्मों के माध्यम से भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात किया। इन्होंने ब्राह्मण धर्म के कर्मकाण्डीय पक्ष का पुरजोर विरोध किया। बौद्ध एवं जैन धर्म नास्तिक दर्शन के प्रणेता माने जाते

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

हैं। इस विषय में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के स्थापत्यकलाविद्, अभिलेखशास्त्रविद् तथा प्राचीन इतिहासविद् **प्रो0 पीयूष भार्गव** का मानना है कि ''इन दोनों समाज़ सुधारकों ने तत्कालीन समाज़ में व्यापक परिवर्तन किये इनके विचारों को आत्मसात कर तत्कालीन लोग वैदिक धर्म के कर्मकाण्डीय पक्ष की अवहेलना कर बौद्ध और जैन धर्म के नास्तिक दर्शन में विश्वास करने लगे। ऐसा सम्भवतः इस कारण हुआ होगा क्योंकि वैदिक कर्मकाण्डों के माध्यम से मनवान्छित फल प्राप्ति का मार्ग अत्यन्त क्लिष्ट, दुर्गम एवं श्रमसाध्य था किन्तु बौद्ध एवं जैन धर्मों में यह सरलता पूर्वक प्राप्त हो जाया करता था। इन धर्मों के प्रणेताओं का मानना था कि मनुष्य अपने कर्मों के वशीभूत होता है अतः कर्म का फल भोगने के लिए उसे बार–बार जन्म लेना पड़ता है यदि कर्म फल को समाप्त कर दिया जाये तो उसको जन्म–मरण से मुक्ति मिल जायेगी और उसे वह सब कुछ प्राप्त हो जायेगा जिसके लिए वह दुर्गम, क्लिष्ट एवं श्रमसाध्य वैदिक कर्मकाण्डों को करता है।''

चूंकि अम्बेडकर नगर जनपद उस समय पूर्णतः वनाच्छादित रहा होगा इसलिए इस जनपद में छठीं शताब्दी ई0 पू0 में मानव बसाव की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी रही होगी। यह जनपद कोसल महाजनपद के अन्तर्गत आता था जिसकी राजधानी श्रावस्ती[15] थी जो वर्तमान में इस जनपद से 170 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। छठीं शताब्दी ई0 पू0 में कोसल का राजा प्रसेनजित था।[16] ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि इसके द्वारा इस जनपद पर शासन किया गया होगा किन्तु वह कभी अम्बेडकर नगर आया था अथवा उसने इस जनपद में कोई निर्माण कार्य करवाया था इस बात की पुष्टि जनपद के विधिवत पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के पश्चात ही हो सकती है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जलस्रोत की सुलभता के कारण कुछ समय के लिए एन0 बी0 पी0 काल के मानवों ने अपने अधिवास निर्मित किये थे। चूंकि वर्तमान में कृषि एवं निर्माण कार्य के चलते स्थानीयों द्वारा इस पुरास्थल को विनष्ट कर दिया गया है, अतः इस स्थल पर पुरावशेषों एवं इस संस्कृति से सम्बन्धि मृद्–पात्रों के नमूनों का संकलन कर पाना अत्यन्त दुरूह कार्य है।

इस पुरास्थल से प्राप्त दूसरी संस्कृति कुषाण कालीन है। कुषाण कालीन संस्कृति से सम्बन्धित मृद्भाण्डों में बाहर की तरफ फैलते मुंह वाले कटोरे को नमून संग्रह के रूप में संग्रहीत किया गया है इसके अतिरिक्त कलश, हाँडी आदि प्राप्त होते हैं।[17] लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के प्राग्–इतिहासविद् एवं क्षेत्रीय पुरातत्त्व वैज्ञानिक **प्रो0 अनिल कुमार** बताते हैं कि ''शुंग और कुषाण काल के मृद्–पात्रों के निर्माताओं ने लगभग समान आकार–प्रकार के मृद्–पात्रों का निर्माण किया है जिस कारण से प्रायः इनके काल–क्रम के निर्धारण को लेकर मतभेद उत्पन्न हो जाता है। इन दोनों काल के मृद्–पात्रों का निर्धारण केवल इनके रिम के नीचे किये गये अवतल कटान के बारीक अध्ययन के माध्यम से ही किया जा सकता है, शुंग काल के मृद्–पात्रों के अवतल कटान अत्यन्त तीव्र एवं गहरे होते हैं किन्तु कुषाण कालीन मृद्–पात्रों में इनके कटान की गहराई प्रायः इनसे कम होती है तथा ये छिछले, बड़े आकार के या फैलते मुह वाले हो सकते हैं।'' इस आधार पर सुरहुरपुर से प्राप्त फैलते मुंह वाले कटोरे का सम्बन्ध कुषाण कालीन संस्कृति से स्थापित किया जा सकता है।

प्राप्त सम्पूर्ण मृद्भाण्ड लाल रंग के हैं। कुषाणों का आदि स्थान चीन था।[18] भारतीय महाद्वीप में आने वाले कुषाणों का मुखिया कुजुलकैडफिसेज था जो अफगानिस्तान से आगे नही बढ़ सका।[19] इस वंश का सबसे प्रतापी शासक कनिष्क प्रथम हुआ जिसका साम्राज्य विस्तार अफगानिस्तान से लेकर मगध की राजधानी पाटलिपुत्र तक था।[20] इसी बीच में कोसल महाजनपद स्थित है अतः प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके द्वारा इस क्षेत्र पर शासन करने की प्रबल सम्भावना है। चूंकि यह एक विदेशी आक्रान्ता था जिसने अपनी दो राजधानियाँ क्रमशः तक्षशिला[21] एवं मथुरा[22] में बनायीं थीं अतः उसके द्वारा इस जनपद पर आवास निर्मित करके रहने की सम्भावना नगण्य है। किन्तु इस बात की सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि पाटलिपुत्र अभियान के क्रम में सम्भवतः उसने इस जनपद से जाने वाले मार्ग का अनुसरण किया हो। यह भी हो सकता है कि इस जनपद में कनिष्क का कोई सामन्त रहता हो। विस्तृत सूचना के अभाव में इस विषय में कुछ भी कह पाना अत्यन्त कठिन है।

सुरहुरपुर पुरास्थल से प्राप्त तीसरी संस्कृति गुप्त कालीन है। इस संस्कृति से सम्बन्धित मृद्–पात्रों में नाखून के आकार वाले एक कटोरे को नमूने के रूप में चयनित किया गया है जो लाल रंग का है। इसके अतिरिक्त रिम युक्त मोटे गढ़न में निर्मित एक अन्य कटोरे को भी नमूना संग्रह हेतु संग्रहीत किया गया है। गुप्तकाल का संस्थापक श्रीगुप्त था जो कुषाणों का सामन्त था।[23] इस वंश में अनेक स्वनाम धन्य राजा हुए हैं जिनमें चन्द्रगुप्त प्रथम[24], समुद्रगुप्त[25], चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य[26], रामगुप्त[27], कुमारगुप्त प्रथम[28] तथा स्कन्दगुप्त[29] इत्यादि का प्रमुखता से नाम लिया जा सकता है। इन समस्त राजाओं ने अपनी राजधानी के रूप में पाटलिपुत्र का चयन किया था। समुद्रगुप्त द्वारा किये गये उत्तरापथ अभियान में कुरु तथा पंचाल जनपद की तरफ जाने के लिए सम्भवतः इस जनपद से होकर जाने वाले मार्ग का अनुसरण किया गया होगा किन्तु किसी भी स्रोत से किसी भी प्रकार की सूचना के अभाव में कुछ कहना कठिन है। बहुत सम्भव है कि उसका कोई सामन्त इस क्षेत्र में शासन कर रहा हो किन्तु यदि ऐसा है तो पुराविदों को पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के माध्यम से इस जनपद से इस काल के अधिवासों को सर्वेक्षित कर उनका विधिवत अध्ययन करना होगा तभी जाकर किसी निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचने में सफलता प्राप्त हो सकेगी। सम्भवतः समुद्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य गुप्त राजाओं द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस जनपद के भू–भाग पर शासन किया गया हो किन्तु ज्ञात स्रोतों से अब तक अम्बेडकर नगर जनपद से गुप्त कालीन व्यवस्थित अधिवास की प्राप्ति नही हो सकी है जिस कारण से किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचना समीचीन नही प्रतीत होता है।

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

4. पूर्वमध्य, मध्य एवं आधुनिक कालीन संस्कृति :

पूर्वमध्य, मध्य एवं आधुनिक कालीन संस्कृति से सम्बन्धित लाल रंग के मृद्भाण्ड

(चित्र सं0–05)

इन संस्कृतियों से केवल लाल रंग के मृद्भाण्ड प्राप्त हुये हैं जिनमें घड़े, कटोरे, हाँडियाँ, कलश, जार, नाद, संग्रह–पात्र, वाटर बेटल, कुल्हड़, मध्यकालीन डिजाइन से युक्त खण्डित मृद्–पात्र इत्यादि का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्त कालीन लोगों के पश्चात इस क्षेत्र पर पूर्वमध्य कालीन लोगों ने अपने आवास निर्मित किये थे। इस क्षेत्र पर शासन करने वाले पूर्वमध्य कालीन राजाओं में पुष्यभूति शासक हर्ष वर्द्धन का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में स्थित घोषी तहसील से प्राप्त हर्ष के मधुबन अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने श्रावस्ती भुक्ति के सोमकुण्ड नामक ग्राम को दान में दिया था।[30] चूंकि श्रावस्ती अम्बेडकर नगर जनपद से अधिक दूरी पर स्थित नही है अतः उसके द्वारा इस क्षेत्र पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने की सम्भावना व्यक्त की जा सकती है किन्तु उसके द्वारा इस जनपद में कोई सैन्य गतिविधि अपनायी गई थी, इस विषय में कुछ भी कहना कठिन है। हर्ष के पश्चात सम्भवतः इस जनपद पर कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचन्द्र ने शासन किया। कुछ मुस्लिम इतिहासकार बताते हैं कि जयचन्द्र ने कन्नौज से लेकर वाराणसी तक के भू–भाग को हस्तगत कर उस पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था।[31] चूंकि अम्बेडकर नगर जनपद कन्नौज और वाराणसी जनपदों के मध्य में स्थित है अतः जयचन्द्र द्वारा इस क्षेत्र पर शासन करने को बल मिलता है। किन्तु उसके द्वारा इस जनपद में किसी भी प्रकार के निर्माण अथवा सैन्य गतिविधि के साक्ष्य न मिलने के कारण उसका इस क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से ही शासन करना समीचीन प्रतीत होता है।

मध्यकाल तक इस स्थल पर सघन बस्ती आवासित हो चुकी थी। जिसके प्रमाण यहाँ से प्राप्त मिट्टी की पकी ईंट के टुकड़े हैं। सुरहुरपुर पुरास्थल पर मध्य कालीन मृद्भाण्डों के अनेक टुकड़े इस बात की तरफ संकेत करते हैं कि इस समय तक इस स्थल पर अनेक अधिवास निर्मित हो चुके थे। प्राप्त मृद्–पात्रों के आधार पर यह कहना कठिन है कि इस पात्र–परम्परा के प्रयोगकर्ता जनपद के स्थानीय निवासी थे अथवा कहीं बाहर से आये थे। इतना अवश्य है कि यहाँ से प्रभूत मात्रा में प्राप्त मृद्–पात्र सघन बस्ती की तरफ संकेत करते हैं। मुस्लिम क्रान्तिकारी फ़कीर सैयद सालार मसूद गाजी उर्फ गाजी मियां (1014–1034 ई0)[32] अर्ध–पौराणिक गजनवी सेना का मुखिया था। इसे सुल्तान महमूद का भांजा कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि भारत विजय के अभियान के क्रम में वह अपने मामा महमूद के साथ भारत आया और उत्तर प्रदेश के बहराइच जनपद में बस गया। 12वीं शताब्दी तक सालार मसूद एक मुस्लिम संत के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। उनके मृत्योपरान्त बहराइच में इनको दफ़नाया गया, जो एक पवित्र दरगाह बन गया। आज भी श्रद्धालु इस दरगाह की यात्रा कर अपने को धन्य मानते हैं।[33] सालार मसूद के जीवनवृत्त का मुख्य स्रोत 17वीं शताब्दी ई0 की ऐतिहासिक कल्पित कथा मिरात–ए–मसूदी है।[34]

मुहम्मद गोरी द्वारा इस जनपद पर आधिपत्य स्थापित किया गया था अथवा नही इस विषय में सूचना का अभाव है किन्तु इस बात की प्रबल सम्भावना है कि तुगलक वंशीय शासक मुहम्मद बिन तुगलक (जौना खां)[35] तथा उसके चचेरे भाई फिरोजशाह तुगलक द्वारा इस जनपद पर अवश्य शासन किया गया होगा। फिरोज तुगलक ने इस जनपद के पड़ोसी जौनपुर[36] जनपद के अतिरिक्त आस–पास के क्षेत्रों पर आधिपत्य कर लिया था। इस प्रकार इसके द्वारा इस जनपद पर शासन करने को बल मिलता है। लोदी शासक बहलोल लोदी[37] ने भी जौनपुर अभियान के दौरान इस जनपद के मार्गों का अनुसरण अवश्य किया होगा। बहुत सम्भव है कि जौनपुर पर अधिकार करने के साथ ही उसने इस जनपद को भी अपने साम्राज्य में मिला लिया हो।

इस जनपद की तहसीलों (टाण्डा, अकबरपुर, आलापुर, जलालपुर एवं भीटी) तथा ब्लॉक (अकबरपुर, कटेहरी, भीटी, टाण्डा, बसखारी, जलालपुर, भियांव रामनगर तथा जहांगीरगंज) के नामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कालान्तर में जनपद पर मुस्लिम शासकों का आधिपत्य स्थापित हो गया था। 16वीं शताब्दी तक जनपद का अधिकांश भू–भाग वनाच्छादित था। 1566 ई0 में मुगल सम्राट अकबर के आगमन के साथ ही अकबरपुर कस्बे की नींव पड़ी। उसने अपने पुत्र शहजादे जहांगीर के नाम पर शहजादपुर एवं जहांगीरगंज तथा अपने मूल नाम जलालुद्दीन के आधार पर जलालपुर

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

कस्बे की स्थापना की।[38] मुसलमानों द्वारा अल्लाह की इबादत करने तथा नमाज़ अदा करने के लिए उसने अकबरपुर में ही तहसील तिराहे के बगल में एक मस्ज़िद का निर्माण करवाय जिसे आज किले वाली मस्ज़िद के नाम से जाना जाता है।[39] तमसा को पार करने के लिए उसने एक लकड़ी के पुल का निर्माण करवाया था जो आज आर. सी. सी. बन गया है। जो भी हो इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस जनपद पर सल्तनत और मुगल दोनों राजवंशों के शासकों ने शासन किया होगा।

जनपद में अनेक रियासतें थीं जिनमें किछौछा रियासत, लोरपुर रियासत भुजगी रियासत तथा सुरहुरपुर रियासत का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है। किसी समय सुरहुरपुर रियासत सहित जलालपुर तक के क्षेत्रों पर भर राजाओं का आधिपत्य था।[40]

इस पुरास्थल पर अनेक संस्कृतियों के मृद्भाण्ड बिखरी हुई अवस्था तथा मिले–जुले रूप में प्राप्त होते हैं। स्थल पर भवन निर्माण करने के क्रम में नींव खोदते समय विद्यमान संस्कृतियों के कतिपय समूचे नमूने प्राप्त होते हैं जो पूर्वमध्य एवं मध्यकालीन हैं। पुरास्थल पर मृद्भाण्डों के अतिरिक्त मध्यकालीन ईटों के टुकड़े प्रचुरता से प्राप्त होते हैं जो यहां इस काल में भवन निर्माण के मूक परिचायक हैं।

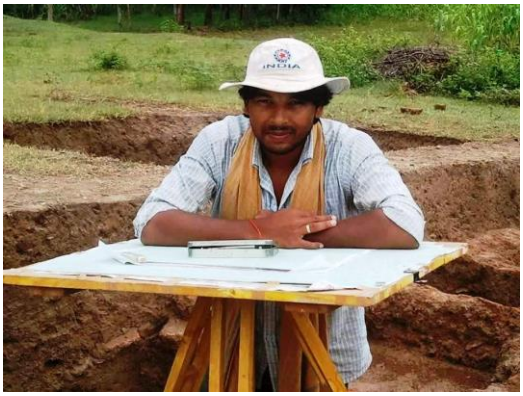

बाबरपुर (सवायजपुर, हरदोई) के टीले का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण एवं बरीडीह (बिलन्दखेड़ा, हरदोई) पुरास्थल के उत्खनित स्थल पर निखात सर्वेक्षक का कार्य करते डॉ0 श्याम प्रकाश

(चित्र सं0 6 एवं 7)

पुरास्थल के समीप स्थित 150 वर्ष प्राचीन नूरशाह का रौज़ा

यह रौज़ा, स्थल से लगभग 500 मीटर की दूरी पर स्थित है जिसे स्थानीय नूरशाह का रौज़ा कहते हैं। ये बेलहरी के मुसलमान फ़कीर थे। ऐसी मान्यता है कि इस स्थल पर एक राजभर जातीय शासक शासन करता था। इसके राज्य को अपने आधित्य में करने के लिए बेलहरी के मुसलमानों के सहयोग से सपरिवार नूरशाह ने उस राजभर शासक पर आक्रमण किया दोनों में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें राजभर पराजित हो गये किन्तु नूरशाह सपरिवार मौत के घाट उतार दिया गया। इस लड़ाई में राजभरों के भवनों को नष्ट कर दिया गया। मुसलमानों द्वारा अपने वीर सेनानायक नूरशाह को सपरिवार इसी खण्डित भवन (खण्डहर) के सबसे ऊपरी भाग में दफ़ना दिया गया। कालान्तर में यह खण्डित भवन नूरशाह के रौज़े के नाम से विख्यात हुआ। फ़कीर नूरशाह के कारण कालान्तर में यह स्थान मुसलमानों के लिये चादर चढ़ाने एवं मन्नतें मांगने का पवित्र स्थल बन चुका था। इसी कड़ी में इस स्थल पर नूरशाह एवं उनके परिवार की शहादत के याद में बेलहरी के मुसलमानों द्वारा प्रतिवर्ष उर्स का आयोजन किया जाने लगा। आज भी उर्स के अवसर पर अम्बेडकर नगर जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक प्रतिष्ठित मुसलमान यहाँ आते हैं।[41]

सुरहुरपुर टीले के समीप से प्राप्त 150 वर्ष प्राचीन राजभरी कोट (रौज़े) के खण्डित अंश, रौज़े के समीप में स्थित तालाब (चित्र सं0 8 एवं 9)

स्थानीय मान्यताएं एवं किंवदन्तियाँ :

धरातलीय सर्वेक्षण के दौरान स्थानीय बुजुर्गों एवं वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ वार्तालाप से इस पुरास्थल के विषय में निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं।

1. यहाँ पहले कुम्हारों की बस्ती थी।
2. लगभग 200 वर्ष पहले यहाँ एक मुस्लिम फ़कीर आये थे जिन्होंने यहाँ के अनेक रोगियों को रोग मुक्त किया था।
3. यहाँ से अनेक धातुओं के सिक्के प्राप्त होते हैं।
4. यहाँ से मिट्टी के बड़े–बड़े जार पात्र प्राप्त हुये थे जिनमें राख भरी हुई थी।
5. मालीपुर–जौनपुर मुख्य मार्ग निमार्ण के समय यहाँ जीव–जन्तुओं की हड्डियों के साथ मानव कंकाल प्राप्त हुये थे।
6. एक ग्रामीण को एक मटका सिक्का प्राप्त हुआ था।
7. यहाँ से अनेक प्रस्तर मूर्तियाँ (प्रमुखतः बुद्ध मूर्तियाँ) प्राप्त हुई थीं जिनको कुछ स्थानीय उठा ले गये थे इसके पश्चात् इन मूर्तियों के विषय में लोगों को कोई सूचना नहीं प्राप्त होती है।
8. रौज़े के समीप स्थित तालाब के बगल में पत्थर की एक गोल संरचना स्थित है जिसके विषय में स्थानीय कहते हैं कि एक बार चार चोर चोरी करके इधर से भाग रहे थे तब कब्र में से निकल कर फकीर नूरशाह ने पत्थर के एक बड़े गिलास की सहायता से उन चारों चोरों को दबोच लिया। स्थानीय बताते हैं कि नूरशाह ने उन चोरों को पत्थर के गिलास में भरकर, गिलास को उल्टाकर जमीन में धंसा दिया जिस कारण उनकी मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात उन्होंने अपनी रुहानी ताक़तों का प्रयोग कर पत्थर के गिलास को अत्यन्त बड़ा और भारी भरकम बना दिया। तबसे यह पत्थर यहाँ इसी अवस्था में रखा हुआ है। कुछ स्थानीयों द्वारा इस बात की पुष्टि के लिए कि नूरशाह ने सच में चोरों को गिलास के अन्दर रखकर दफ़न किया था अथवा नहीं, इस पत्थर के ऊपरी सिरे को तोड़ दिया किन्तु इसमें से किसी भी प्रकार के मानव अस्थि की प्राप्ति न हो सकी।

रौज़े के समीप स्थित गोल पत्थर का टूटा अंश, रौज़े के ऊपर निर्मित नूरशाह एवं उनके परिजनों की समाधियाँ (चित्र सं0 10 एवं 11)

नमूना संग्रह विधि (Data collection Method)

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

ग्रामस्तरीय सर्वेक्षण

अम्बेडकर नगर स्थित सुरहुरपुर पुरास्थल का धरातलीय सर्वेक्षण कार्य किया गया साथ ही वहाँ पर चल रही परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों का भी सर्वेक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त पुरास्थल से सम्बन्धित स्थानीय धाराणाओं का भी विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शोध का महत्व

सुरहुरपुर पुरास्थल से प्रकाश में आये पुरास्थल से प्राप्त विभिन्न कालों के मृद्पात्रों के आधार पर इस क्षेत्र का व्यवस्थित इतिहास लिखने का प्रयास किया गया है जो भविष्य में इस क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों के साथ–साथ अम्बेडकर नगर जनपद के इतिहास को समझने में भी लाभकारी सिद्ध होगा।

शोध की आवश्यकता

वर्तमान समय में पुरातात्त्विक शोध कार्य की महत्ता बढ़ती जा रही है। पुरातात्त्विक शोध कार्य के द्वारा प्राचीन सभ्यताओं तथा संस्कृतियों से सम्बन्धित नये–नये तथ्य आये दिन प्रकाश में लाये जा रहे हैं, इन्हीं तथ्यों के उचित प्रयोग से भारत के प्राचीन इतिहास को तथ्यपरकता के साथ लिखने में सहायता प्राप्त हो रही है। इसी क्रम में अम्बेडकर नगर जनपद मुख्यालय से लगभग 21 कि0मी0 द0 प0 में स्थित अम्बेडकर नगर जनपद के सुरहुरपुर पुरास्थल का व्यवस्थित पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्य किया गया। सर्वेक्षण के दौरान यहाँ से पांच सांस्कृतिक कालक्रमों की खोज की गई जिससे इस जनपद के सुव्यवस्थित इतिहास के अध्ययन में सहायता प्राप्त होगी। जनपद में प्रवाहित होने वाली प्राचीन नदियाँ घाघरा तथा टोंस हैं जो यहाँ की भौगोलिक स्थिति का निर्धारण करती हैं।

शोध समस्या

किस पुरास्थल के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से कौन–कौन सी पुरासंस्कृतियों तथा पुरास्थलों का पता चल सकता है? जिनके आधार पर वहाँ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक अवशेषों को प्रकाश में लाया जा सकता है, यह एक चुनौती भरा कार्य है।

परिकल्पना

1. व्यवस्थित पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से विविध पुरासंस्कृतियों की प्राप्ति।
3. व्यवस्थित पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से प्रकाश में आये मृद्भाण्डों एवं पुरावशेषों के आधार पर प्राचीन अधिवास प्रणाली का ज्ञात होना।
4. व्यवस्थित पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से प्रकाश में आयी पुरासंस्कृतियों एवं पुरावशेषों के आधार पर सुरहुरपुर क्षेत्र के क्रमबद्ध इतिहास को प्रकाश में लाना।

शोध प्रविधि

प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व विषय की अपनी अलग–अलग शोध प्रविधियाँ होती हैं जिन्हें ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक शोध प्रविधियाँ कहा जाता है। इनका प्रयोग शोध समस्या के आवश्यकतानुसार किया जाता है। सुरहुरपुर पुरास्थल पर पुरातात्त्विक कार्य करने के लिए सर्वेक्षात्मक प्रविधि (Surveying Method) का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

नमूना संग्रह विधि

नमूना संग्रह के लिए सुरहुरपुर पुरास्थल के टीले सहित समीप के जलाशय एवं लघु नदी मझुई के किनारों का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्य कर तथ्यों एवं आकड़ों का संग्रहण किया गया।

साक्षात्कार

सुरहुरपुर के निवासियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा उस गाँव में स्थित प्राचीन टीले एवं आस–पास के क्षेत्र के विषय में जानकारी प्राप्त की गई। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित लोक साहित्य एवं किंवदन्तियों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया। उपरोक्त के अतिरिक्त टोपोशीट, ग्राम/पुरास्थल विवरणिका, डिजिटल कैमरा, जीपीएस, जनपद का मानचित्र, अन्वेषण से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का भी प्रयोग किया गया।

सुरहुरपुर पुरास्थल से ज्ञात प्राचीन अधिवास प्रणाली

अधिवास से तात्पर्य किसी वन्य भू–क्षेत्र में मानव द्वारा निर्मित भवनों, बाग–बगीचों, वाणिज्य–व्यापार, उनके द्वारा दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं आदि से है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो अधिवास बसाव की वह प्रक्रिया है जिसमें किसी भू–क्षेत्र का मानवीकरण किया जाता है। एक अधिभोग इकाई के रूप में व्याप्त अधिवास अंग्रेजी भाषा के शब्द सेटेलमेंट का समानार्थी है। भाषा वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण में इस शब्द का उद्भव प्राच्य अंग्रेजी के शब्द सेटल अथवा सेटलन से माना जा सकता है।[42]

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

सुप्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ट्रिवार्था अधिवास शब्द को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि अधिवास से अभिप्राय अध्यावसन इकाई में जनसंख्या के विशिष्ट समूहन से है इसमें निवास करने वाले लोगों के लिए मकानों की सुविधा पायी जाती है। इस प्रकार अधिवास मनुष्यों के उन संगठित उपनिवेशों के द्योतक है जिसमें उनके मकानों तथा मार्गों को सम्मिलित किया जाता है।[43]

अधिवास मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के स्तर के ठोस प्रमाण हैं इनके अध्ययन से किसी क्षेत्र के निवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्तर तथा इनमें होने वाले परिवर्तनों की प्रवृत्ति के बारे में जाना जा सकता है। क्षेत्र के बसाव की प्रक्रिया, अधिवासों की उत्पत्ति तथा उनकी आकारिकी आदि की व्याख्या इतिहास के बिना भली भाँति नहीं की जा सकती है, यही कारण है कि पुरातत्त्व विज्ञान के क्षेत्र में रिमोट सेंसिंग तकनीकों की आवश्यकता पड़ रही है। पुरातात्त्विक उत्खनन में मानव बसाव के क्षेत्रों का विशेष महत्व है तथा इतिहास को अधिवासों से पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते हैं जिनके आधार पर अतीत की पुर्नरचना तथा ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या की जा सकती है।[44]

क्रम सं0	पुरास्थल का नाम	क्षेत्रफल वर्ग मी0 में	ऊँचाई मी0 में	जलस्रोत	प्राप्त संस्कृतियाँ
1.	सुरहुरपुर	81,000	लगभग 5 मी0	समीप में मझुई / मजुई नदी	1. उत्तरी काले चमकीले मृद्पात्र परम्परा वाली संस्कृति 2. कुषाण कालीन संस्कृति 3. गुप्तकालीन संस्कृति 4. पूर्वमध्य कालीन संस्कृति 5. मध्य एवं आधुनिक कालीन संस्कृति

सुरहुरपुर पुरास्थल के धरातलीय सर्वेक्षण से प्राप्त सबसे प्राचीन संस्कृति उत्तरी काले चमकीले मृद्पात्र परम्परा वाली है। इसका प्रारम्भ छठीं शताब्दी ई0पू0 में निर्धारित है। विधिवत पुरातात्त्विक उत्खनन के अभाव में इस काल के मानवों के आवासीय गतिविधियों के विषय में किसी भी स्रोत से किसी भी प्रकार की सूचना का अभाव है। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि इस काल का मानव घास–फूंस की झोपड़ी बनाकर रहता होगा। पुरास्थल पर लाल रंग के मृद्भाण्ड बहुतायत में बिखरे हुए हैं किन्तु स्थानीयों द्वारा कृषि करने के कारण यहाँ से एन0 बी0 पी0 संस्कृति युगीन मृद्भाण्ड बहुत अल्प मात्रा में प्राप्त होते हैं। बहुत देर तक सर्वेक्षण करने के पश्चात कुछ नमूने प्राप्त हुए जिनमें से अधिकांश आकार विहीन थे। हमें ज्ञात है कि संदर्भ विहीन पुरावशेषों के संकलन मात्र से किसी भी काल–खण्ड के इतिहास का पुर्ननिर्माण लगभग असम्भव हो जाता है इसीलिए नमूना संग्रह में एक लाल रंग के रिम युक्त थाली के टुकड़े का चयन किया गया है जिसका सम्बन्ध उत्तरी काले चमकीले मृद्पात्र परम्परा वाली संस्कृति से स्थापित किया जा सकता है।

कुषाण काल में उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नगरीय करण की प्रक्रिया चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गई थी इस काल का मानव पक्की ईंटों की सहायता से अपने भवनों का निर्माण करने लगा था। केवल सम्पूर्ण गंगा घाटी ही नहीं बल्कि मध्य एशिया तक हुए विभिन्न पुरातात्त्विक उत्खननों से पता चलता है कि ईसा की प्रथम तीन शताब्दियों में शहरीकरण अत्यन्त विस्तृत हो चुका था।[45] इसी क्रम में इस पुरास्थल पर इस संस्कृति से सम्बन्धित मृद्पात्र एवं स्थानीयों को रिम के नीचे अवतल कटान वाले घड़े एवं कटोरे प्राप्त होने से यहाँ इस संस्कृति के विद्यमान होने की सम्भावना व्यक्त की जा सकती है। इस स्थल से प्राप्त स्त्री मृण्मूर्तियों एवं प्रस्तर बुद्ध मूर्तियों (स्थानीयों को प्राप्त) का सम्बन्ध सम्भवतः इसी काल–खण्ड से रहा होगा।

गुप्तकाल तक अधिवास व्यवस्था अत्यन्त उन्नत हो चुकी थी। पुरास्थल पर गुप्तकाल के अवशेष नाम मात्र के प्राप्त होते हैं, नमूना संग्रह में केवल नाखून के आकार के एक कटोरे का चयन किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस संस्कृति के लोग इस स्थल पर बहुत अल्प समय के लिये आये थे जिन्होंने कुछ समय पश्चात किन्हीं कारणों वश इस स्थल का परित्याग कर दिया था, किन्तु ऐसा करने के पीछे क्या प्रयोजन रहा होगा इस बात की पुष्टि बिना विधिवत पुरातात्त्विक उत्खनन के सम्भव नहीं है। गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है।[46] प्रारम्भिक स्थानीयों को इस स्थल से कुछ अलंकृत एवं सांचे में ढले हुए मृद्–पात्रों तथा सुडौल आकार की स्त्री मृण्मूर्तियों की प्राप्ति हुई थी जिसका सम्बन्ध गुप्तकालीन संस्कृति से किया जा सकता है।

पूर्वमध्य काल में अधिवासों की संख्या में वृद्धि दृष्टिगोचर होती है। इस समय व्यापारिक गतिविधियाँ उन्नत दशा में थीं। अनेक राजवंशों के मध्य युद्ध के कारण कृषि व्यवस्था प्रभावित हो रही थी। पुरास्थल से अत्यधिक मानवीय गतिविधियों के कारण स्पष्टतयः इस संस्कृति के मृद्–पात्रों की प्राप्ति नहीं हुई है किन्तु कुछ आकार विहीन टुकड़े इस पुरास्थल पर इस संस्कृति के विद्यमान होने की तरफ़ संकेत कर रहे थे उन्हीं को आधार मानकर यहाँ इस संस्कृति को चिन्हित किया गया है। बहुत सम्भव है इसी काल में अधिवासों में वृद्धि हुई हो। सम्भवतः इसी समय लोगों द्वारा कृषि के अतिरिक्त अन्य उन्नत व्यवसायों को अपनाया गया होगा।

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

मध्यकाल में इस क्षेत्र पर एक अलग संस्कृति, इस्लाम धर्म के लोगों अर्थात मुस्लिम शासकों का आधिपत्य हो गया था। पुरास्थल से अनेक टोंटीदार सुराही बड़े, मोटे गढ़न वाले नाद, जार तथा चिलम आदि के अवशेष, प्राप्त हुए हैं जो यहां इस संस्कृति के विद्यमान होने की पुष्टि करते हैं। स्थानीय मानते हैं कि मध्यकाल में सालार मसूद गाजी नामक तुर्क आक्रान्ता ने सुरहुरपुर क्षेत्र पर आधिपत्य कर लिया था इसी के द्वारा लूट–पाट किये जाने के क्रम में यहाँ के अधिवास प्रभावित हो गये, यहाँ के स्थानीयों को अपने आवासों से हटा दिया गया लम्बे समय तक मानवीय गतिविधि न होने के कारण कालान्त में यह स्थल पूर्णतः वीरान हो गया। समय के साथ यहाँ की संस्कृतियाँ ज़मीनदोज़ हो गईं। किन्तु इस स्थल के एक भाग से अत्यधिक मृद्–पात्र प्राप्त होने से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मुस्लिम आक्रमण के पश्चात् सम्भवतः अल्प मात्रा में यहाँ मुस्लमानों को बसाया गया था जिसके प्रमाण के रूप में यहाँ से बहुतायत में प्राप्त मुस्लिम संस्कृति से सम्बन्धित मृद्–पात्रों का उल्लेख किया जा सकता है। कालान्तर में यहाँ पर बस्ती सम्पूर्ण टीले पर आवासित हो गई वर्तमान में इस टीले पर आधुनिक अधिवासों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो मजुई नदी के किनारे तक पहुँच गई है। मजुई नदी के दूसरे किनारे से सुल्तानपुर जनपद की सीमा प्रारम्भ होती है।

पुरास्थल सर्वेक्षण विवरणिका

1. **पुरास्थल का नामः** सुरहुरपुर
2. **अक्षांशः** 26^0 15′ 37.08′′उत्तरी अक्षांश
   देशान्तरः 82^0 40′ 04.55′′ पूर्वी देशान्तर
3. **स्थिति :** अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)

मुख्यालय से पहुँच विवरण : स्थल पर पहुँचने के लिए अम्बेडकर नगर जनपद मुख्यालय से लगभग 21 कि0मी0 की यात्रा जौनपुर की तरफ करनी पड़ती है। स्थल सुरहुरपुर लघु कस्बे में मुख्य मार्ग के दायें किनारे पर स्थित है।
दूरी (किमी0 में) : 21 कि0मी0

4. **पुरास्थल का विवरण**
   - **पारिस्थितिकी :** परती भूमि/खेत
   - **भौगोलिक संरचना :** लगभग गोलाकार
   - **पुरातात्विक : टीले की उँचाई :** लगभग 5 मी0
   - **पुरास्थल का क्षेत्र–विस्तार :** लगभग 300X270 मी0
   - **जमाव की गहराई :** लगभग 5 मी0
5. **पुरास्थल का प्रकार : मृद्भाण्डीय संस्कृति :–** उत्तरी कृष्णमार्जित, कुषाण, गुप्त, पूर्वमध्य एवं मध्यकालीन
   - **संरचनायें :** अज्ञात
   - **शवाधान :** अज्ञात
6. **पुरावशेष संकलन विधि :** सर्वेक्षणात्मक
7. **सम्भावित कालानुक्रम :** छठीं शताब्दी ई0पू0 से मध्यकाल
8. **अन्य :** पुरास्थल मानवीय क्रिया–कलापों एवं कृषि कार्य से क्षतिग्रस्त हो चुका है।
9. **पुरास्थल सम्बन्धी किंवदन्तियाँ/साहित्यिक विवरण :** यहां पहले कुम्हारों की बस्ती थी। लगभग 200 वर्ष पहले यहाँ एक मुस्लिम फ़कीर आये थे जिन्होंने यहाँ के अनेक रोगियों को रोग मुक्त किया था। यहां से अनेक धातुओं के सिक्के प्राप्त होते हैं, इत्यादि।

10. **सर्वेक्षण की अवधि में सर्वेक्षणकर्ता का नाम एवं पता :** श्याम प्रकाश, एम0 ए0, (गोल्ड मेडलिस्ट, पुरातत्त्व विज्ञान) शोध–छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय – 226007
11. **सर्वेक्षण तिथि :** 17 मार्च 2015

संदर्भ

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Ambedkar_Nagar_district#Geography
2. उत्तर प्रदेश 2011, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ. प्र. लखनऊ, पृ. 1
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/तमसा
4. https://hi.wikipedia.org/wiki/सुल्तानपुर–जिला
5. https://ambedkarnagar.nic.in/hi/पर्यटन
6. वही
7. गूगल मैप की सहायता से ज्ञात

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

8. श्याम प्रकाश, लेख–सुरहुरपुर से प्राप्त हुए प्राचीन संस्कृति के अवशेष, दृष्टव्यः–परिधि न्यूज़, अम्बेडकर नगर संस्करण, आलापुर/अकबरपुर, 19 से 25 मार्च 2015, पृ. 2

9. वही

10. पाण्डेय, जय नारायण, पुरातत्त्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 12 वाँ संस्करण, पृ. 553–54

11. वही, पृ. 553–554

12. वही, पृ. 553

13. शर्मा, राम शरण, भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रथम हिन्दी संस्करण, 2018 पृ. 130–36

14. वही, 126–130

15. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2018–19, पृ. 947–48

16. वही, पृ. 947–948

17. श्याम प्रकाश, लेख–सुरहुरपुर से प्राप्त हुए प्राचीन संस्कृति के अवशेष, पूर्वोद्धृत, पृ. 2

18. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पूर्वोद्धृत, पृ. 333–334

19. वही, पृ. 334–335

20. वही, 335–340

21. पाण्डेय, जय नारायण, पुरातत्त्व विमर्श, पूर्वोद्धृत, पृ. 642–648

22. वही, पृ. 943–944

23. शर्मा, राम शरण, भारत का प्राचीन इतिहास, पूर्वोद्धृत, पृ. 219–220

24. वही, पृ. 220

25. वही, पृ. 220–221

26. वही, पृ. 221–222

27. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पूर्वोद्धृत, पृ. 394–395

28. वही, पृ. 403

29. वही, पृ. 409

30. वही, 500–502

31. https://hi.wikipedia.org/wiki/जयचन्द

32. https://hi.wikipedia.org/wiki/सैयद–सालार–मसूद–गाजी, प्रकाश, श्याम, लेख–जनपद अम्बेडकर नगर में मुग़ल कालीन गतिविधियों का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक अध्ययन दृष्टव्य–एजुकेशनल साइंस रिव्यू, डॉल्फ़िन प्रकाशन, पृ. 45–46

33. https://ambedkarnagar.nic.in/hi/इतिहास, एजुकेशनल साइंस रिव्यू, पूर्वोद्धृत, पृ. 45–46

34. वही

35. https://hi.wikipedia.org/wiki/मुहमद बिन तुग़लक

36. https://hi.wikipedia.org/wiki/जौनपुर

37. https://hi.wikipedia.org/wiki/बललोल लोदी

38. https://ambedkarnagar.nic.in/hi/इतिहास

39. https://ambedkarnagar.nic.in/hi/इतिहास, एजुकेशनल साइंस रिव्यू, पूर्वोद्धृत, पृ. 45–46

40. https://ambedkarnagar.nic.in/hi/इतिहास, वही, पूर्वोद्धृत, पृ. 45–46

41. प्रकाश, श्याम, लेख–सुरहुरपुर से प्राप्त हुए प्राचीन संस्कृति के अवशेष, पूर्वोद्धृत, पृ. 2

42. प्रकाश, श्याम, लेख– हरदोई जनपद के शाहाबाद तहसील का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण, देखेंः– प्राग्धारा, अंक–26, उ. प्र. राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, 2016–17–18, पृ. 143

43. प्रकाश, श्याम, लेख– सण्डीला तहसील (जनपद–हरदोई) का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण, देखेंः– प्राग्धारा, अंक–25, उ. प्र. राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, 2015–16 पृ. 136

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश

44. प्रकाश, श्याम, हरदोई जनपद का पुरातत्त्व, अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2016, पृ. 228

45. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पूर्वोद्धृत, पृ. 349–350

46. प्रकाश, श्याम, लेख–लखमापुर : एक पुरातात्त्विक स्थल देखें:– विद्यावार्ता, हर्षवर्द्धन प्रा0 लि0, बीड, महाराष्ट्र, वॉल्यूम–11, इश्यू–21, जनवरी से मार्च 2018, पृ. 161–162

*Corresponding Author: डॉ0 श्याम प्रकाश